Raga of the Month October 2024 Raga Roopkalyani राग रूपकल्याणी

राग रूपकल्याणी पंडित चिन्मय लाहिरीजी का सृजन है। पंडित चिन्मय लाहिरीजी के इस राग का ऑडियो यू ट्यूब पर उपलब्ध है। इस रागकी जानकारी उस ऑडियो क्लिप की मददसे प्राप्त की है। इस राग में मध्यम तीव्र , निषाद कोमल, धैवत वर्जित हैं और बाकी स्वर शुद्ध हैं।
राग का आरोह- सा रे ग म॑ प नि सा; अवरोह सां नि प म॑ ग रे सा। इस राग का वर्गीकरण हिंदुस्तानी संगीतके किसी थाट में नहीं कर सकते। कर्नाटक संगीत में इस राग को वाचस्पती (नं ६४) या रिषभप्रिया (नं ६२) मेलकर्ता में मान सकते है। इस रागके समस्वरी राग धनकोनी कल्याण, कृष्ण कल्याण और मधुकल्याण हैं।

कर्नाटक संगीत में इसके समान मिलताजुलता राग काथ्यायिनी है जो रिषभप्रिया मेलकर्ता (नं ६२)का जन्य राग है।

आज के ऑडियोमें हम सुश्री संजाना जाना घोशाल और पंडित चिन्मय लाहिरीजी के गायन का अंश सुनेंगे।

संदर्भ : "Ragapravaham" – Dr. M.N. Dhandapani & D. Pattammal

आभार : पंडित यशवंतबुवा महाले , ऑडियो - यू ट्यूब

01-10-2024

Link to the list of 160+ "Raga of the month" articles

@ Archive of ROTM Articles - https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx